



Happy New Year - 2025

“इस नये वर्ष में स्व-कल्याण के साथ विश्व सेवा में सकाश देने का श्रेष्ठ प्लैन बनाओ”

(याद पत्र, दादी जी - 18-12-2024)

परमप्यारे अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा बाप समान बनने के उमंग-उत्साह में रहने वाले, अपनी शक्तिशाली मन्सा सकाश द्वारा विश्व परिवर्तन के श्रेष्ठ कार्य में निमित्त बनी हुई टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ, नये वर्ष की उमंग-उत्साह भरी बधाईयां स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - नया वर्ष नये उमंग-उत्साह को लेकर आ रहा है। बाबा के सभी बच्चे विशेष जनवरी मास में ब्रह्मा बाप समान बनने का तीव्र पुरुषार्थ करते हैं। यह मास हम सबके अति प्रिय ब्रह्मा बाबा की स्मृतियों का मास है, सभी बाबा के बच्चे ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न बनने के लिए पूरा ही मास विशेष अन्तर्मुखी बन अव्यक्तवतन की सैर करते, एकान्त में बैठ तपस्या करते और अपनी शक्तिशाली मन्सा द्वारा पूरे विश्व को सकाश देने की सेवा भी करते हैं।

अब प्यारे बापदादा का विशेष इशारा है बच्चे, स्व कल्याण का ऐसा श्रेष्ठ प्लैन बनाओ जो विश्व सेवा में आपेही सकाश मिलती रहे। अभी तक सेवा में जो विघ्न आ रहे हैं, उन विघ्नों के पर्दे को हटाने के लिए वाचा सेवा में मन्सा शक्ति को एड करो। विशेष अपनी शक्तिशाली मन्सा सकाश द्वारा आत्माओं की बुद्धियों का परिवर्तन करो। मास्टर रहमदिल बन अपनी मन्सा वृत्ति से वायुमण्डल द्वारा आत्माओं को शक्ति दो। अभी थोड़े समय में सारे विश्व की सेवा सम्पन्न करनी है, तत्वों सहित सबको पावन बनाना है इसलिए अपनी मन्सा में शुद्ध संकल्पों का स्टॉक जमा करो, शुभ भावनाओं से सम्पन्न बनो। आपकी शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना, श्रेष्ठ वृत्ति, श्रेष्ठ वायब्रेशन एक स्थान पर होते भी अनेकों की सेवा के निमित्त बन सकती है, इसमें स्थूल साधन, चान्स वा समय की प्रॉब्लम नहीं है, सिर्फ लाइट-माइट से सम्पन्न बनना है। मन्सा सेवा के लिए मन, बुद्धि व्यर्थ सोचने से मुक्त हो, 'मनमनाभव' के मन्त्र का सहज स्वरूप हो।

हमारी मन्सा शक्ति का दर्पण है - बोल और कर्म। यदि मन्सा शक्तिशाली वा शुभ है तो वाचा और कर्मणा स्वतः ही शक्तिशाली शुद्ध, शुभ-भावना वाली होगी। तो बोलो, हमारे मीठे मीठे भाई बहिनें इस नये वर्ष में ऐसा श्रेष्ठ प्लैन स्व-उन्नति और विश्व कल्याण के लिए बना रहे हो ना! जैसे कोई बिजनेसमेन स्वप्न में भी अपना बिजनेस देखता है, ऐसे हम सभी का कार्य है विश्व-कल्याण करना। जो अपने इसी आक्यूपेशन को स्मृति में रख सेवा में सदा बिजी रहेंगे वह सहज ही मायाजीत बन जायेंगे।

बाकी प्यारे अव्यक्त बापदादा की यह मंगल मिलन की अलौकिक सीज़न सबको बहुत सुखद अनुभूतियां करा रही है। बाबा सभी बच्चों को अपने स्नेह में समाते हुए, अशरीरी भव का वरदान दे उड़ती कला में उड़ा रहे हैं। मधुबन का शक्तिशाली वायुमण्डल, सभी दादियों की, बड़ों की छत्रछाया, पालना के सूक्ष्म वायब्रेशन आने वाले सभी भाई बहिनों को भरपूर कर देते हैं। अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के. रतनमोहिनी



ये अव्यक्त इशारे



अपनी शक्तिशाली मन्सा द्वारा सकाश देने की सेवा करो

1) आप शान्ति दूत बच्चे, कहाँ भी रहते, चलते-फिरते सदा अपने को शान्ति दूत समझकर चलो। जो स्वयं शान्त स्वरूप, शक्तिशाली स्वरूप में स्थित होंगे वह दूसरों को भी शान्ति और शक्ति की सकाश देते रहेंगे।

2) जैसे ऊंची टॉवर से सकाश देते हैं, लाइट माइट फैलाते हैं। ऐसे आप बच्चे भी अपनी ऊंची स्थिति अथवा ऊंचे स्थान पर बैठ कम से कम 4 घण्टे विश्व को लाइट और माइट दो। जैसे सूर्य भी विश्व में रोशनी तब दे सकता है जब ऊंचा है। तो साकार सृष्टि को सकाश देने के लिए ऊंचे स्थान निवासी बनो।

3) अपने डबल लाइट फरिश्ता स्वरूप में स्थित हो, साक्षी बन सब पार्ट देखते सकाश अर्थात् सहयोग दो क्योंकि आप सर्व के कल्याण के निमित्त हो। यह सकाश देना ही निभाना है, लेकिन ऊंची स्टेज पर स्थित होकर सकाश दो। वाणी की सेवा के साथ-साथ मन्सा शुभ भावनाओं की वृत्ति द्वारा सकाश देने की सेवा करो।

4) यह सकाश देने की सेवा निरन्तर कर सकते हो, इसमें तबियत वा समय की बात नहीं है। दिन रात इस बेहद की सेवा में लग सकते हो। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा, रात को भी आंख खुली और बेहद की सकाश देने की सेवा होती रही, ऐसे फालो फादर करो। जब आप बच्चे बेहद को सकाश देंगे तो नजदीक वाले ऑटोमेटिक सकाश लेते रहेंगे। इस बेहद की सकाश देने से वायुमण्डल ऑटोमेटिक बनेगा।

5) आप ब्राह्मण बच्चे तना हो। तने से ही सारे वृक्ष को सकाश पहुंचती है। तो अब विश्व को सकाश देने वाले बनो। अगर 20 सेन्टर, 30 सेन्टर या दो अढ़ाई सौ सेन्टर या ज़ोन, यह बुद्धि में रहेगा तो बेहद में सकाश नहीं दे सकेंगे इसलिए हदों से निकल अब बेहद की सेवा का पार्ट आरम्भ करो। बेहद में जाने से हद की बातें आपेही छूट जायेंगी। बेहद की सकाश से परिवर्तन होना - यह फास्ट सेवा का रिजल्ट है।

6) अब अपने दिल की शुभ भावनायें अन्य आत्माओं तक पहुंचाओ। साइलेन्स की शक्ति को प्रत्यक्ष करो। हर एक ब्राह्मण बच्चे में यह साइलेन्स की शक्ति है। सिर्फ इस शक्ति को मन से, तन से इमर्ज करो। एक सेकण्ड में मन के संकल्पों को एकाग्र कर लो तो वायुमण्डल में साइलेन्स की शक्ति के प्रकम्पन स्वतः

फैलते रहेंगे।

7) अभी आप बच्चे अपने श्रेष्ठ शक्तिशाली संकल्प द्वारा सकाश दो। कमजोरों को बल दो। अपने पुरुषार्थ का समय दूसरों को सहयोग देने में लगाओ। दूसरों को सहयोग देना अर्थात् अपना जमा करना। अभी ऐसी लहर फैलाओ - सैलवेशन लेना नहीं है, सैलवेशन देना है। देने में लेना समाया हुआ है।

8) जितना-जितना समय समीप आता जा रहा है उतना व्यर्थ संकल्प भी बढ़ रहे हैं! लेकिन यह चुकतू होने के लिए बाहर निकल रहे हैं। उन्हों का काम है आना और आपका काम है उड़ती कला द्वारा, सकाश द्वारा परिवर्तन करना। घबराओ नहीं। उसके सेक में नहीं आओ।

9) अब स्व कल्याण का ऐसा श्रेष्ठ प्लैन बनाओ जो विश्व सेवा में सकाश आपेही मिलती रहे। अभी उमंग-उत्साह से अपने मन में यह पक्का वायदा करो कि हम बाप समान बनकर ही दिखायेंगे। ब्रह्मा बाप का भी बच्चों से अति स्नेह है इसलिए एक-एक बच्चे को इमर्ज कर विशेष समान बनने की सकाश देते रहते हैं।

10) इतनी सारी प्रकृति को परिवर्तन करना, तमोगुणी संस्कारों वाली आत्माओं के तमोगुणी वायब्रेशन्स को बदलना और स्वयं को भी ऐसे खूने नाहेक वायुमण्डल के वायब्रेशन्स से सेफ रखना तथा उन आत्माओं को सहयोग देना, इस विशाल कार्य के लिए मन्सा को शुभ भावनाओं से सम्पन्न शक्तिशाली बनाओ।

11) अभी सेवा में सकाश दे, बुद्धियों को परिवर्तन करने की सेवा एड करो। फिर देखो सफलता आपके सामने स्वयं झुकेगी। सेवा में जो विघ्न आते हैं, उस विघ्न के पर्दे के अन्दर कल्याण का दृश्य छिपा हुआ है। सिर्फ मन्सा-वाचा की शक्ति से विघ्न का पर्दा हटा दो तो अन्दर कल्याण का दृश्य दिखाई देगा।

12) जैसे बापदादा को रहम आता है, ऐसे आप बच्चे भी मास्टर रहमदिल बन मन्सा अपनी वृत्ति से वायुमण्डल द्वारा आत्माओं को बाप द्वारा मिली हुई शक्तियां दो। जब थोड़े समय में सारे विश्व की सेवा सम्पन्न करनी है, तत्वों सहित सबको पावन बनाना है तो तीव्र गति से सेवा करो।

13) कोई भी यह नहीं कह सकता कि हमको तो सेवा का चान्स नहीं है। कोई बोल नहीं सकते तो मन्सा वायुमण्डल से सुख की

वृत्ति, सुखमय स्थिति से सेवा करो। तबियत ठीक नहीं है तो घर बैठे भी सहयोगी बनो, सिर्फ मन्सा में शुद्ध संकल्पों का स्टॉक जमा करो, शुभ भावनाओं से सम्पन्न बनो।

14) अपनी शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना, श्रेष्ठ वृत्ति, श्रेष्ठ वायब्रेशन द्वारा किसी भी स्थान पर रहते हुए मन्सा द्वारा अनेक आत्माओं की सेवा कर सकते हो। इसकी विधि है - लाइट हाउस, माइट हाउस बनना। इसमें स्थूल साधन, चान्स वा समय की प्राब्लम नहीं है। सिर्फ लाइट-माइट से सम्पन्न बनने की आवश्यकता है।

15) मन्सा सेवा के लिए मन, बुद्धि व्यर्थ सोचने से मुक्त होना चाहिए। 'मनमनाभव' के मन्त्र का सहज स्वरूप होना चाहिए। जिन श्रेष्ठ आत्माओं की श्रेष्ठ मन्सा अर्थात् संकल्प शक्तिशाली है, शुभ-भावना, शुभ-कामना वाले हैं वह मन्सा द्वारा शक्तियों का दान दे सकते हैं।

16) मन्सा शक्ति का दर्पण है - बोल और कर्म। चाहे अज्ञानी आत्मायें, चाहे ज्ञानी आत्मायें - दोनों के सम्बन्ध-सम्पर्क में बोल और कर्म शुभभावना, शुभकामना वाले हों। जिसकी मन्सा शक्तिशाली वा शुभ होगी उसकी वाचा और कर्मणा स्वतः ही शक्तिशाली शुद्ध होगी, शुभभावना वाली होगी। मन्सा शक्तिशाली अर्थात् याद की शक्ति श्रेष्ठ होगी, शक्तिशाली होगी, सहजयोगी होंगे।

17) जैसे अपने स्थूल कार्य के प्रोग्राम को दिनचर्या प्रमाण सेट करते हो, ऐसे अपनी मन्सा समर्थ स्थिति का प्रोग्राम सेट करो। जितना अपने मन को समर्थ संकल्पों में बिजी रखेंगे तो मन को अपसेट होने का समय ही नहीं मिलेगा। मन सदा सेट अर्थात् एकाग्र है तो स्वतः अच्छे वायब्रेशन फैलते हैं। सेवा होती है।

18) हर समय, हर आत्मा के प्रति मन्सा स्वतः शुभभावना और शुभकामना के शुद्ध वायब्रेशन वाली स्वयं को और दूसरों को अनुभव हो। मन से हर समय सर्व आत्माओं प्रति दुआयें निकलती रहें। मन्सा सदा इसी सेवा में बिजी रहे। जैसे वाचा की सेवा में बिजी रहने के अनुभवी हो गये हो। अगर सेवा नहीं मिलती तो अपने को खाली अनुभव करते हो। ऐसे हर समय वाणी के साथ-साथ मन्सा सेवा स्वतः होती रहे।

19) जैसे वाचा सेवा नेचुरल हो गई है, ऐसे मन्सा सेवा भी साथ-साथ और नेचुरल हो। वाणी के साथ मन्सा सेवा भी करते रहो तो आपको बोलना कम पड़ेगा। बोलने में जो एनर्जी लगाते हो वह मन्सा सेवा के सहयोग कारण वाणी की एनर्जी जमा होगी और मन्सा की शक्तिशाली सेवा सफलता ज्यादा अनुभव करायेगी।

20) जितना अभी तन, मन, धन और समय लगाते हो, उससे मन्सा शक्तियों द्वारा सेवा करने से बहुत थोड़े समय में सफलता

ज्यादा मिलेगी। अभी जो अपने प्रति कभी-कभी मेहनत करनी पड़ती है - अपनी नेचर को परिवर्तन करने की वा संगठन में चलने की वा सेवा में सफलता कभी कम देख दिलशिकस्त होने की, यह सब समाप्त हो जायेगी।

21) जब मन्सा में सदा शुभ भावना वा शुभ दुआयें देने का नेचुरल अभ्यास हो जायेगा तो मन्सा आपकी बिजी हो जायेगी। मन में जो हलचल होती है, उससे स्वतः ही किनारे हो जायेंगे। अपने पुरुषार्थ में जो कभी दिलशिकस्त होते हो वह नहीं होंगे। जादूमन्त्र हो जायेगा।

22) अभी मन्सा की क्वालिटी को बढ़ाओ तो क्वालिटी वाली आत्मायें समीप आयेंगी। इसमें डबल सेवा है - स्व की भी और दूसरों की भी। स्व के लिए अलग मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। प्रालब्ध प्राप्त है, ऐसी स्थिति अनुभव होगी। इस समय की श्रेष्ठ प्रालब्ध है "सदा स्वयं सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न रहना और सम्पन्न बनाना"।

23) समय प्रमाण अब मन्सा और वाचा की इकट्टी सेवा करो। लेकिन वाचा सेवा सहज है, मन्सा में अटेन्शन देने की बात है इसलिए सर्व आत्माओं के प्रति मन्सा में शुभ भावना, शुभ कामना के संकल्प हों। बोल में मधुरता, सन्तुष्टता, सरलता की नवीनता हो तो सहज सफलता मिलती रहेगी।

24) जितना स्वयं को मन्सा सेवा में बिजी रखेंगे उतना सहज मायाजीत बन जायेंगे। सिर्फ स्वयं के प्रति भावुक नहीं बनो लेकिन औरों को भी शुभ भावना और शुभ कामना द्वारा परिवर्तित करने की सेवा करो। भावना और ज्ञान, स्नेह और योग दोनों का बैलेन्स हो। कल्याणकारी तो बने हो अब बेहद विश्व कल्याणकारी बनो।

25) मन्सा-सेवा बेहद की सेवा है। जितना आप मन्सा से, वाणी से स्वयं सैम्पल बनेंगे, तो सैम्पल को देखकर के स्वतः ही आकर्षित होंगे। कोई भी स्थूल कार्य करते हुए मन्सा द्वारा वायब्रेशन्स फैलाने की सेवा करो। जैसे कोई बिजनेसमेन है तो स्वप्न में भी अपना बिजनेस देखता है, ऐसे आपका काम है - विश्व-कल्याण करना। यही आपका आक्यूपेशन है, इस आक्यूपेशन को स्मृति में रख सदा सेवा में बिजी रहो।

26) वर्तमान समय विश्व कल्याण करने का सहज साधन अपने श्रेष्ठ संकल्पों की एकाग्रता द्वारा, सर्व आत्माओं की भटकती हुई बुद्धि को एकाग्र करना है। सारे विश्व की सर्व आत्मायें विशेष यही चाहना रखती हैं कि भटकी हुई बुद्धि एकाग्र हो जाए वा मन चंचलता से एकाग्र हो जाए। यह विश्व की मांग वा चाहना तब पूरी कर सकेंगे जब एकाग्र होकर मन्सा शक्तियों का दान देंगे।

27) मन्सा द्वारा सकाश तब दे सकेंगे जब निरन्तर एकरस स्थिति में स्थित होने का अभ्यास होगा। इसके लिए पहले व्यर्थ संकल्पों को शुद्ध संकल्पों में परिवर्तन करो। फिर माया द्वारा आने वाले अनेक प्रकार के विघ्नों को ईश्वरीय लगन के आधार से समाप्त करो। एक बाप दूसरा न कोई इस पाठ द्वारा एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाओ।

28) मन-बुद्धि को एकाग्र करने के लिए मनमनाभव के मंत्र को सदा स्मृति में रखो। मनमनाभव के मंत्र की प्रैक्टिकल धारणा से पहला नम्बर आ सकते हो। मन की एकाग्रता अर्थात् एक की याद में रहना, एकाग्र होना यही एकान्त है। जब सर्व आकर्षणों के वायब्रेशन से अन्तर्मुख बनेंगे तब मन्सा द्वारा पूरे विश्व को सकाश देने की सेवा कर सकेंगे।

29) मन्सा सेवा करने के लिए सर्व शक्तियों को अपने जीवन का अंग बना लो। ऐसे बाप समान परफेक्ट बनो जो अन्दर कोई डिफेक्ट न हो। तब श्रेष्ठ संकल्पों की एकाग्रता द्वारा मन्सा द्वारा

स्वतः सकाश फैलेगी।

30) जैसे बीज में सारा वृक्ष समाया रहता है, ऐसे संकल्प रूपी बीज में सारे वृक्ष का विस्तार समा जाए तब संकल्पों की हलचल समाप्त होगी। जैसे आजकल दुनिया में राजनीति की हलचल, वस्तुओं के मूल्य की हलचल, करैन्सी की हलचल, कर्मभोग की हलचल, धर्म की हलचल .. बढ़ती जा रही है। उस हलचल से स्वयं को वा सर्व को बचाने के लिए मन-बुद्धि की एकाग्र करने का अभ्यास करो। एकान्तवासी बनो।

31) समय प्रमाण चारों ओर सकाश देने का, वायब्रेशन दे देने का, मन्सा द्वारा वायुमण्डल बनाने का कार्य करना है। अभी इसी सेवा की आवश्यकता है। जैसे साकार रूप में देखा – कोई भी ऐसी लहर का समय जब आता था तो दिन-रात सकाश देने, निर्बल में बल भरने का अटेंशन रहता था। समय निकाल आत्माओं को सकाश देने की सेवा चलती थी। ऐसे फॉलो फादर करो।

(त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

मधुबन

गुल्जार दादी जी के अनमोल वचन

“बड़ी बात को छोटा कर दो जिससे खुशी कभी कम ना हो”

(गुल्जार दादी जी 30-07-09)

आप सभी जो बैठे हो वो सभी बेफिकर बादशाह हो? जो बेफिकर होंगे वो खुश भी होंगे और आनन्द में भी होंगे। यह भी मौका मिलता है आपस में रूह-रिहान करने का। मधुबन में सबसे मिलन हो जाता है, ब्राह्मण परिवार कितना बड़ा है, उसका परिचय हो जाता है।

हमें बाबा से वरदान मिला है – खुश रहो और खुशी बांटो। तो खुशी वही बाटेंगे जो खुश रहेंगे। खुशी एक ऐसी चीज़ है जिसमें हेल्थ वेल्थ और हैपी तो है ही। अगर खुशी जाती है तो एक खुशी नहीं गयी, हेल्थ, वेल्थ भी चली जाती है। खुशी जैसी कोई खुराक नहीं और खुशी जैसा कोई खजाना नहीं इसीलिए बाबा कहता है खुशी कभी जानी नहीं चाहिए। बाबा ने कह दिया है पेपर तो आयेंगे, बातें तो आयेंगी लेकिन बातें भगवान की चीज़ अविनाशी खुशी लेकर जायें, यह नहीं होना चाहिए। हमें तो भगवान की देन है, खुश रहो खुशी बांटो।

खुशी जाने के विशेष दो ही कारण होते हैं, एक हमारे अन्दर जो इच्छा है वो पूर्ण नहीं होती है तो खुशी जाती है। दूसरा

हम घर में आराम से बैठे हैं, कोई बात नहीं है लेकिन हमारा कोई मित्र आता है और हमारे लिए झूठ-सच्ची ग्लानि के शब्द बोलता है जो हम हैं नहीं, लेकिन ग्लानि करते हैं तो क्या होता है? उस समय हम ग्लानि सुनके खुशी दे देते हैं और शोक ले लेते हैं। यानि इतने समझदार हम हैं! वो चाहता नहीं है अपनी खुशी हमको दो, हम आपेही दे देते हैं। पांच शब्द बाबा बताते हैं, क्यों, क्या, कब, कौन, कैसे? यह पश्चाताप के साधन हैं, इसमें ही उलझते रहते हैं। फिर वेस्ट थॉट चलते रहते हैं। भविष्य को सोचेंगे तो वेस्ट थॉट बदल जायेंगे। तो खुशी कभी भी नहीं गंवाना। पहाड़ जैसी समस्या भी आ जाये, तो पहाड़ को तोड़ने नहीं बैठ जाना, क्यों कैसे करना माना पहाड़ को तोड़ना। उड़ के पहाड़ पर बैठ जाना। आप बड़ी बात को बड़ा नहीं करो, छोटा करो। बाबा ने हमें खुशानसीब बनाया है, तो हमारी खुशी कभी नहीं जानी चाहिए।

अभी मधुबन में किसी के पास माया आई? सब माया प्रुफ रहे ना! तो फिर खुशी तो होगी ही। इस वातावरण में रहकर,

मनन-चिन्तन करके भिन्न-भिन्न अवस्थाओं का अनुभव करते रहेंगे तो माया को आने की फुर्सत ही नहीं मिलेगी। बाबा ने दो शब्द कहे थे, दो शब्दों में सारी बातें आ जाती हैं। एक तो गेट-आउट करो, दूसरा गेस्ट हाउस याद रखो। गेट-आउट माया को करो, मैं बिजी हूँ। यहाँ जैसे अभ्यास करते हो, वहाँ भी जाकर ऐसा ही अभ्यास रखना। बीच-बीच में अटेंशन देकर लिंक जोड़कर रखना नहीं तो कर्म करते कर्मयोग नहीं रहता है, कर्मकर्ता बन जायेंगे।

बाबा ने हमें भिन्न-भिन्न स्वमान दिये हैं, अगर हम भिन्न-भिन्न स्वमान रोज़ स्मृति में रखें और दूसरा प्राप्ति सामने रखें तो जैसे अपने को होमवर्क दे दिया। फिर उसी होमवर्क में बिजी रहेंगे तो आपका चेहरा ही सेवा करेगा, बोलने की भी जरूरत नहीं होगी। समय पर वरदान आदि जो देते हैं, वो सब एक समय पर याद नहीं होता है, तो यह सब खजाना अपने पास रखना चाहिए।

बाबा कहते हैं सदा आनंद स्वरूप में रहो लेकिन वह आनन्दित स्थिति सदा क्यों नहीं रहती है? इसका कारण है सीट पर सेट नहीं रहते हैं। एक बार बाबा ने कहा था - तुम साक्षी-दृष्टा की सीट पर सेट होकर यह ड्रामा देखो। अपसेट हो जाते हो ना तभी यह खुशी जाती है या आनन्दमय अवस्था का अनुभव नहीं होता है। चक्रधारी बनके, साक्षीदृष्टा होकर अपने सारे कल्प का स्वदर्शन चक्र घुमाओ। स्वदर्शन चक्र घुमाने से नशा चढ़ता है कि परमधाम में था, फिर परमधाम से नीचे आया। परमधाम कहने से परमधाम की स्थिति में स्थित हो जाओ। हमारी आत्मिक स्थिति क्या थी, सतयुग में क्या स्थिति थी फिर द्वापर कलियुग में ब्रह्मा बाबा के साथ हम भी भगत बने! फिर ब्राह्मण बने फिर फरिश्ता बनके देवता बनेंगे। तो बाबा समय प्रति समय जो युक्तियाँ बताते हैं उसको यूज करना चाहिए। कितनी बार बाबा ने भिन्न-भिन्न ड्रिल बताई है।

यह शाम का सात बजे का समय जो गाया हुआ है, जब

देवतायें भ्रमण करते हैं उस समय भी आपको भिन्न-भिन्न अवस्था का अनुभव करना चाहिए। अपनी प्राप्ति की बातें, स्वमान की बातें, अपनी भिन्न-भिन्न स्थितियों का अनुभव करना चाहिए। अगर विस्मृति हो भी गई हो तो टाइम फिक्स होने के कारण पुनः स्मृति आ जायेगी। हमेशा कायदे में फायदा होता है। जो बाबा युक्तियाँ बताते हैं, तो समय अनुसार उन युक्तियों का फायदा लो, उनको इस्तेमाल करो। समय पर वो युक्ति याद करने से हमारी अवस्था सहज और सदाकाल की हो जायेगी। हमारी जो समय अनुसार दिनचर्या बनी हुई है वो भी हमारी स्थिति को आगे बढ़ाती है। ऐसे नहीं मैं तो रहता ही योग में हूँ, लेकिन पॉवरफुल स्थिति में रहा? खास अटेंशन देकर बैठते हैं, उससे फर्क पड़ता है।

तो हमारे नियम बने हुए हैं, दिनचर्या बनी हुई है वो हम अटेंशन में रखें। आनन्द की स्थिति हमारे सिवाए और किसी की हो नहीं सकती है। हमें अप्राप्ति कुछ है ही नहीं। जब भगवान हमारा हो गया है, सबसे बड़े ते बड़े नशे की बात है कि दुनिया भगवान को ढूँढती है, हमको भगवान ने ढूँढा। जब भी नशे की अवस्था कम हो तो, बाबा ने हमारे लिए क्या क्या किया, वो प्राप्तियों की लिस्ट हमेशा याद रखो। तो नशा चढ़ाना नहीं पड़ता है, चढ़ जाता है। हम तो कहते हैं मुरली में रोज़ सब प्रकार की, चारों ही सब्जेक्ट की बातें आती हैं। तो रोज़ की मुरली को सिर्फ रिवाइज़ करो। उसमें धारणा की, सेवा की, ज्ञान की, योग के स्थिति की बातें होती हैं। उन्हें मुरली से अलग-अलग नोट कर लो। अपने पास अपना खजाना इमरजेन्सी का होना चाहिए। यह भी स्टूडेंट की निशानी है।

अभी हमें अपनी खुशी नहीं गंवानी है, आनन्दमय स्थिति में रहना है। इसकी विधि है सीट पर सेट रहो। मन का मालिक बन मन को बिजी रखो। यह सब बातें यूज करने से याद रहती हैं, नहीं तो भूल जाते हैं। ऐसी-ऐसी युक्तियाँ अपने से करते रहना चाहिए। ओम् शान्ति।

दादी जानकी जी की अनमोल शिक्षायें

“चारों तरफ से सबकी दुआयें लेनी है तो रोब और मोह से मुक्त हो जाओ, ना दुःख दो ना दुःख लो” (03-09-06)

गुडमॉर्निंग। साइलेन्स में जाने का ऐसा अभ्यास हो जो कार्य-व्यवहार में आते भी हलचल में न आयें। जैसे आवाज में आने के आदती हैं, ऐसे आवाज से परे जाने के आदती बनें। सतयुग में देवतायें भी आवाज में आयेंगे लेकिन वह आवाज कैसी होगी!

अभी रिहर्सल करनी है आवाजों की दुनिया में रहते, साइलेन्स में रहने का। पहले हमारा दिल और मन शान्त रहना सीखे, सच्ची दिल से याद में भी रहेंगे और सेवा भी करेंगे। याद भी दिल से करना पड़ेगा। दिल से एकाग्रता की शक्ति जमा करने का लक्ष्य

हो। एकाग्रता से जमा हुई शक्ति सुखदाई है, इसमें प्यारे बाबा की याद अपने आप आती है। बाबा अभी ध्यान खिचवाता है कि जो मैं कहता हूँ, उसे ध्यान से सुनो! ध्यान से सुनते हैं तो करने का जी चाहता है। जो बात अच्छी ध्यान में आती है, प्रैक्टिस करते हैं, अनुभव होता है, तो आगे चलके और प्रैक्टिस करने की इच्छा होती है। संगम का यह समय है ही रिहर्सल करने का।

सर्व गुणों में सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी बनने की अभी से रिहर्सल करनी है। सम्पूर्णता में जरा भी कमी न हो। अंश मात्र भी कोई विकार न हो। किसी के प्रति भी मन में घृणा है तो गुस्सा आयेगा। थोड़ा भी गुस्सा अन्दर हमको शान्त होने नहीं देगा, प्यार से याद करने नहीं देगा। अन्दर जब विकारों का अंश खत्म हो जायेगा तब फ्री हो जायेंगे। नहीं तो अंश से कभी वंश पैदा हो जाता है। फिर कन्ट्रोल से बाहर हो जाता है, दबा भी नहीं सकते हैं, समाने की शक्ति भी नहीं है। दबाने से दुःख होगा, समाने से अन्दर का रास्ता क्लियर हो जाता है। समा लिया, आगे चले। कोई भी बात बैरियर होके ना रहे। याद की ऐसी शक्ति हो, जो कोई भी बैरियर हटा दो। छाया मुआफिक भी कोई बात सामने न आये। अगर छाया मात्र भी कोई बात सामने आती है तो बाबा की छत्रछाया का अनुभव नहीं होता है।

बाबा कहता अपने अनुभव की शक्ति को बढ़ाओ, औरों को भी शक्ति का सहयोग दो। जो भी सामने आये, सम्बन्ध-सम्पर्क में आये, शक्ति महसूस करे। कमजोर को यह पता नहीं है कि मैं कमजोर किस कारण से हूँ। कमजोरी में सिर्फ चिल्लाना होता है, कमजोर कुछ नहीं कर सकता है तो चिड़चिड़ापन आता है। बोझ महसूस होता है। बाबा कहते हैं बच्चे लाइट रहो या माइट ऐसी खींचो जो लाइट रहने के आदती हो जाओ।

लाइट रहने के लिए और बाबा की माइट खींचने के लिए क्या करना है? यह बातें मन में होनी चाहिए। ऐसी बातों के अनुभव में रहना चाहिए। अच्छा भारी हो जायें तो लाइट कैसे रहें। अगर हम लाइट (हल्के) रहते हैं तो वायुमण्डल भी हल्का शान्त और उमंग-उल्लास वाला हो जाता है। पंछी सिर्फ शान्त बैठा हो तो क्या लगेगा पर उमंग-उल्लास में उड़ता हुआ हो तो उसका आवाज भी मीठा लगेगा। तो यह संगमयुग उड़ती कला का युग है। भक्ति में मानते हैं कि कला ईश्वर का वरदान होती है, उसे अभिमान नहीं होगा।

तो जितना हम निर्विकारी बनते हैं उतना सर्वगुण सम्पन्न बनते हैं, कनेक्शन है। जरा भी कोई विकार है तो गुण छिप जाते हैं, अवगुण दिखाई पड़ते हैं। ईर्ष्या भी विकार है, आवेश ले आता है। घृणा भी विकार है, दृष्टि ही चेन्ज कर देता है। तो अपने ऊपर

बहुत ध्यान रखना है। बाबा सेवा में सब कलायें भर देता है, जिसमें थोड़ी भी कला है उसमें बाबा और बल भर देता है। निष्काम सेवा करते-करते और ही कला बढ़ जाती है। अगर गुण धारण करने में ध्यान नहीं है तो 16 कला सम्पूर्ण नहीं बन सकते। तो विवेक और अनुभव से काम लेना है, इसमें विवेक की सुने। कई तो इतना व्यस्त हैं जो अपने विवेक की सुनने की भी फुर्सत नहीं है। बाबा का बनने से विवेक जाग्रत हुआ है। विवेक जाग्रत होने से बुद्धि काम करने लगी है। कभी मैं सोचती हूँ, विवेक से पूछूँ या दिल से पूँछूँ! दिल गवाही देती है, कि तुम विवेक से ठीक काम करने लगी है। फिर बाबा राज़ी होता है।

हमारे से कोई पूछे तुम खुश-राज़ी हो। मैं कहूँगी आप मेरे तरफ से बाबा से पूछो। मेरा बाबा, मेरे से खुशराज़ी है। बाबा खुशराज़ी होगा, जो हर दिन, हर घड़ी, हर घन्टे, हर मिनट मैं खुशराज़ी होंगी। अगर मैं किसी भी मिनट राज़ी न रही तो बाबा को क्या मुंह दिखायेंगी! लौकिक में जो भी मनुष्य करते हैं दुनिया को मुंह दिखाने के लिए। कई बार फेलियर हो जाता है तो छिप के बैठ जाते हैं। हमें तो बाबा का आज्ञाकारी, वफादार, इमानदार, फरमानदार बनना है। आज्ञाकारी बच्चा सदा हाँ जी कहेगा। प्रभु की आज्ञा सिरमाथे। बच्चा वफादार है तो अधिकारी है, सजनी वफादार है तो बड़ी बलवान है। न कभी व्यक्ति की याद आये, न वैभव की याद आये। भाई में कोई रोब न हो, बहन में कोई मोह न हो, इससे मुक्त हो जायें, किसी प्रकार का जरा सा मोह है, शरीर के साथ है या सम्बन्ध में है, तो दुःखी जरूर करेगा। रोब है तो किसी न किसी को दुःख जरूर देगा, इनसे मुक्त हो जायेंगे तो चारों तरफ से दुआ मिलेगी। जहाँ भी कदम रखो वहाँ सबकी दुआ मिले। अभी संगमयुग है दुआओं का भण्डारा भरपूर करने के लिए। एक ज्ञान का भण्डारा भरपूर हो दूसरा सेवा अर्थ भण्डारी भरपूर हो। जो इमानदार होगा वह कभी किसी प्रकार से भी हेराफेरी नहीं करेगा। न बोल में, न कर्म में। मैंने देखा है ईमानदारी से रहने वाले को बाबा के दिल में बैठने का स्थान मिल जाता है।

बाबा ने हम सबको सुखमय संसार बनाने के निमित्त बनाया है तो अन्दर मेरा संसार सुखमय है! यह चेक करो। कोई दुःख लगा हुआ हो तो अपनी एकाग्रता की शक्ति से, बाबा को सामने रखकर उसे मिटाओ। अभी दुःखी होने का समय नहीं है। अतीन्द्रिय सुख में रहने का समय है। अन्तर्मन से शान्त रहने का समय है, बाबा के प्यार की शक्ति जमा करने का समय है। बाकी अपने आपसे पूछो कि मेरा समय सफल हो रहा है, हमारे सद्के औरों का भी समय सफल हो, निष्फल न हो। ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

“मरजीवा बनना माना सब कुछ दान कर देना, विकल्प समाप्त हो जाना” (1999)

बाबा आया है हम बच्चों को जीते जी मरजीवा बनाने। मरजीवा बनने की विधि बाबा ने सुनाई है - दे दान तो छोटे ग्रहण। तो आज इस बात पर सभी विचार करो कि हमारा मरजीवा जन्म है। मरजीवा अर्थात् सब कुछ बाप को दान दे दिया। दान किया माना ग्रहण छूटा। यज्ञ में हमेशा दान किया जाता, दान करते तो मन-इच्छित फल मिलता है। तो कौन सा दान हमें इस यज्ञ में करना है? यह है अपने जीवन का दान। चाहे इसे जीवन शब्द कहो, चाहे तन-मन-धन कहो, चाहे स्वभाव संस्कारों का दान कहो या देह सहित देह के सब सम्बन्धों का दान कहो। पिछला जो कुछ है उसका दान। दान माना दान। दान की भाषा बहुत बड़ी है। शब्द सिर्फ दान है।

तो हरेक विचार करो कि क्या मेरी यह जीवन दान की हुई हैं या दान करना सोच रहे हैं? दान का अर्थ क्या है, इस पर एक राजा जनक की कहानी आती है, उनका दृष्टान्त देते हैं कि राजा ने अपना सब कुछ दान किया। लेकिन उनका वायदा था कि जब मैं घोड़े पर पांव रखूँ, उस समय ही सब दान माना जाय, तो जनक ने जब एक पैर घोड़े पर रखा तो कहा यह सब तुम्हारा हो गया, उसी समय जब दूसरा पैर उठाने लगा तो अष्टावक्र ने कहा रुको यह पांव क्यों उठाया? दूसरा पांव उठाने का संकल्प क्यों आया? यह तो सब तुमने दान कर दिया... इसी प्रकार यह संकल्प के ऊपर कहानी है। तो हम सब बच्चे भी इस शिवबाबा के यज्ञ में मरजीवा बनने अथवा आहुति होने आये हैं, तो अपने से पूछें कि हम पूरी आहुति हुए हैं? या होने का सोच रहे हैं? यह बहुत गहरी बात है, क्योंकि सारे जीवन का यह पाठ है। मैं मरजीवा बना हूँ अथवा मैं समर्पित हुआ हूँ? अगर मैं कहूँ मेरी जीवन मरजीवा तो है ही, मैं पुरानी दुनिया से मर गई, बाबा की बन गई, तो बाबा पूछते तुम पूरी दान हो गई हो? अगर दान हो गये तो उसकी निशानी ग्रहण छूटा, यह भी कर्मों की गहन गति है।

जब आत्मा मरजीवा बन गई तो वह आत्मा किसी सम्बन्धी से, सम्पत्ति से, वस्तु से वैभव से अपना ममत्व रख नहीं सकती, क्योंकि मरजीवा बनना अर्थात् सब कुछ दान होना। अगर जरा भी किसी में ममत्व है, बुद्धियोग जाता है तो क्या उसे दान हुआ कहेंगे? मिसाल कई बार किसी को अपनी कोई बात का जिद होता, मेरी बात राइट हो या रांग हो, परन्तु यह मेरी बात माननी

ही चाहिए, यह मेरी जिद है। तो जहाँ जिदी स्वभाव है क्या वहाँ आत्मिक स्थिति है? स्व की जिद है माना देह-अभिमान है। देह-अभिमान है तो सत्य, असत्य की तुलना कर नहीं सकते। अगर यह रियलाइज करते हैं कि मेरे में जिद का स्वभाव है तो दान क्यों नहीं करते। जिद के अगेन्सट है सरल बनना। सरल बनो तो जिद खत्म हो जाता। जिद है तो श्रीमत का उल्लंघन होता। जब किसी बात का जिद आता तो सोचो यह श्रीमत है वा मनमत? जब मैं दान हो गई तो किसी भी बात की जिद क्यों करती?

यह ज्ञान जितना ही सहज है उतना ही गुह्य है, अगर सदा श्रीमत को सामने रखो, बाबा को सामने रखो तो अपने स्वभाव का विस्तार समाप्त हो जाता है। जैसे भक्ति का विस्तार है ज्ञान, बिन्दु। हम सबसे भक्ति का विस्तार दूर हो गया है, ऐसे पुराने सम्बन्ध का, स्वभावों का विस्तार दूर हुआ है? अगर हम श्रीमत को सामने लाते तो सब विस्तार दूर हो जाता, बिन्दु बन जाओ तो कोई विस्तार नहीं। जब मरजीवा बन गये तो माइन्ड सदा टावर आफ पीस में चाहिए। अगर अन्दर में कोई विकल्प है तो मन स्वीट होम में जा नहीं सकता। वह मरजीवा नहीं, मरजीवा बनने की पहली निशानी ही है सब विकल्प समाप्त हों। अगर बुरे विकल्प हैं तो मरजीवा नहीं।

हमें बाबा की श्रीमत है तुम्हें किसी के अवगुणों को नहीं देखना है। तो मैं किसी के अवगुणों को देख अपना मन खराब क्यों करती? खराब माना बुरी दृष्टि गई, खराब माना जोश आया, खराब माना वैर भाव में आये। क्या जहाँ खराब है, वहाँ मरजीवा हुई या श्रीमत का पालन किया? तो जब यह शब्द हरेक अपनी डायरी से निकाले कि मेरा यह खराब-मिजाज़ है, क्या करूँ विकल्प आते हैं? जब यह सब खत्म करो तब जय-जयकार होगी। जब तक बुरे संकल्प चलते हैं तब तक मैं मरजीवा नहीं। एक है परा स्थिति और दूसरा है अपरा स्थिति। अपरा माना ही देह-अभिमान के अन्दर की स्थिति। तो मैं किस स्थिति में रहती, परे स्थिति में या देह-अभिमान की स्थिति में?

मरजीवा माना टावर आफ पीस। पीस में रहने के लिए अन्दर में कई बातें डिस्टर्ब करती हैं। चाहते भी हैं कि देहभान से परे रहें। बाबा की याद में बैठें लेकिन कोई न कोई बुद्धि में आ जाते जिनसे बुद्धि डिस्टर्ब हो जाती। डिस्टर्ब माना डिस्ट्रेक्टिव।

डिस्टर्ब माना बाप से डिस्टर्ब, जो डिस्टर्ब होते वह डिस्ट्रक्शन का काम करते। कन्स्ट्रक्शन का नहीं।

कई बार कईयों को यह संकल्प आते कि हम यहाँ आये, हमें कोई ने पूछा ही नहीं, हमारी खातिरी नहीं की। बहन जी तो फलाने को ही देखती हैं, मेरे को तो पूछती ही नहीं, मेरी उन्हें कोई परवाह ही नहीं। लेकिन मैं पूछती हूँ - क्या तुम मेरी परवाह के लिए आये हो? परवाह थी पार ब्रह्म में रहने वाले की, बाकी और कोई क्या परवाह करेगा! तो अपने से पूछो मैं किसके परवाह में प्रेरित होती हूँ? किसी देहधारी की परवाह में प्रेरित तो नहीं हूँ? मैं बाप की परवाह रखके आई, बाबा मैं आपकी सदा शीतल छाया में रहूँ। बाकी किसी के परवाह में आना, स्वभाव में आना, क्या यही मेरी अवस्था है? यह तो अजब सा लगता जब कहते फलाने को मेरी कोई परवाह ही नहीं। जैसे छोटे बच्चे कहें, वैसे सब बातें हैं, फिर पूछते हैं विनाश कब होगा? आखिर भी कर्मातीत कब बनेंगे? बाबा पूछते हैं क्या तुम देह-अभिमान से अतीत हो गये हो? जब अतीत नहीं हुए तो कर्मातीत कैसे बनेंगे? हमें बाबा ने अपने प्रवाह में लिया है, उसके प्रवाह में रहो तो सेकेण्ड में मरजीवा बन जायेंगे।

समझो आज मेरे में एक फीलिंग की बीमारी है, छोटी-मोटी बात मुझे लग जाती, उदासी छा जाती, डिस्टर्ब कर देती, तो क्या मैं दान हुई। दान हो गई तो फिर कैसे कहती मुझे फीलिंग आई, तुम कौन? तुम तो बाबा की हो ना फिर किसको फीलिंग आई? मुझे फीलिंग आई माना मैंने दान की हुई वस्तु को वापस लिया। दान हुई वस्तु को वापस लेना महान पाप है। जब मैं दान हो गई तो मुझे किसी बात की फीलिंग क्यों? मैं दान हूँ माना बाबा की अमानत हूँ, तो मैं डिस्टर्ब क्यों हुई? मैं बाबा की अमानत हूँ तो जब बाबा को फीलिंग नहीं आती तो मुझे क्यों आई। मैं दान हूँ तो मैंने दान वापस क्यों लिया? यह है सूक्ष्म पाप।

मैं बाबा की अमानत हूँ, मेरे संकल्प भी अमानत हैं, मेरा चरित्र, मेरी सेवा भी अमानत है, तो मैं बाबा की अमानत में ख्यानत क्यों करती? डिस्टर्ब होना माना अमानत में ख्यानत। जब बाबा की बन गई तो बाबा ने जो लकीर लगा कर दी है, उस पर हमें चलना है, बाबा ने हमें कहा तुम्हें अमृतवेले उठ मुझे याद करना है, तुम्हें मेरे ही कार्य में जीवन देनी है, तुम्हें बाबा के यज्ञ से खाना है, बाबा का कार्य करना है। तो फिर यह संकल्प भी क्यों आता कि मुझे फलानी सर्विस का शौक है, यह मुझे चान्स नहीं देते। यह भी कौन सी अवस्था है? कुछ न हुआ तो मैं डिस्टर्ब हो गई, यह भी अमानत में ख्यानत है। संकल्प में भी विचलित होना माना अमानत में ख्यानत।

बाबा ने कहा एक है ब्रह्मपति की दशा और दूसरी है राहू की। तो बुद्धि जब टक्कर खाती तो समझो राहू का ग्रहण लगा, कमाई में घाटा आना माना कला कम हुई। ब्रह्मपति की दशा माना बाबा की याद में मेरी स्थिति ऊंची-ऊंची बढ़ती जा रही है। कई फिर बाबा के शब्दों को पकड़कर अपने ऊपर जैसे पॉलिश करते हैं - कहते हैं बाबा ने तो कहा है ना माया के विघ्न अन्त तक आयेंगे। लेकिन यह नहीं सोचते, बाबा ने यह तो कहा तूफान आयेंगे, साथ में यह भी तो कहा है बच्चे तुम्हें क्रास करना है, कभी भी रुकना नहीं है। रुकने का तो नहीं कहा ना। हमें तो माया से परे-परे जाकर मायाजीत बनना है। अगर मैं माया के वश हूँ, तो क्या वश वाला दान हो चुका। न तुम इन नयनों के वश रहो, न मुख के.. वश होना माना बेवश हो जाना। वश कर लेना माना मालिक हो जाना। तो मैं बेवश हूँ या वश किया हुआ है? हरेक खुद को चेक करो मैंने अपने को इस यज्ञ में कहाँ तक दान कर लिया है? दान माना दान, दान को वापस लेना माना महापाप।

हमारी लगन बाबा है, हमारा सब कुछ बाबा है, दुनिया में भले कितने भी पढ़े-लिखे विद्वान हों परन्तु उनको इतनी छोटी बात भी समझ में नहीं आती कि हम आत्मा शिवबाबा की सन्तान हैं। हम पावन थे अब हमें पावन बनना है, यह उनको समझ में नहीं आता। बाबा कहता उन बिचारों का दोष नहीं। तो क्या हम भी कहें कि हमारा भी क्या दोष! लेकिन हमें तो बाबा ने आपसमान मास्टर नॉलेजफुल बनाया है। हमें नालेज है, बाबा ने हमें पास्ट को भुलाकर भविष्य सामने दिखाया है, तुम्हें देवता बनना है। हमें तो अपनी देवताई क्वालिफिकेशन में जाना है। अगर कोई पिछली बातें माइन्ड में आती तो बाबा कहता माया से हारे हार है।

माया कई ऐसे खेल दिखाती है जो न मन हो, न चित। आज आप लोग बैठे हो, बहुत मस्ती चढ़ी हुई है, कल बाहर गये, संकल्प आया विनाश हो न हो, चलो शादी कर लें। संकल्प आया माना मरा। जो दान हो गये, बाबा की सच्ची सजनी बन गये, उन्हें क्या यह संकल्प आ सकता! ऐसे संकल्प आना माना दान किया हुआ वापस लेना, यह भी महापाप है इसलिए अब किसी बात की गफलत में नहीं आना है। मैंने सब कुछ बाबा को दे दिया तो सब खत्म। न मैं हूँ, न मेरा है। मैं बाबा का, मेरा सब बाबा का, फिर यह संस्कार, यह स्वभाव कुछ भी डिस्टर्ब नहीं करेंगे। इतना यह सहज है, इसी से निरन्तर योगी बन जायेंगे। बुद्धि को कुछ डिस्टर्ब नहीं करेगा, लाइन क्लीयर हो जायेगी। बाबा की मुरली का सार है मरजीवा बनो, सब कुछ दान कर लो तो सब छूट जायेगा। यही बहुत बड़ी सब्जेक्ट है। ओम शान्ति।